महाविद्यालय के संस्थापक
श्रद्धेय साहू जगदीश सरन जी

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा संपोषित

हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ. बबलू सिंह
मुख्य सम्पादक
असि.प्रोफे., हिन्दी विभाग
संयोजक/राष्ट्रीय संगोष्ठी

-: आयोजक :-

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय

(सम्बद्ध-एम.जे.पी.रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश)
अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

Scanned by CamScanner

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा संपोषित

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

दिनांक : 20 व 21 फरवरी, 2018 (दिन मंगलवार एवं बुधवार)

आयोजक

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमरोहा (उ.प्र.)

प्राचार्या/संरक्षक

डॉ० (श्रीमती) वन्दना रानी गुप्ता

मुख्य सम्पादक

डॉ० बबलू सिंह

-: सम्पादक :-

डॉ. निखिल कुमार दास
डॉ. हरेन्द्र कुमार
डॉ. नवनीत कुमार विश्नोई
डॉ. आभा सिंह
डॉ. मन मोहन सिंह
डॉ. विकास मोहन श्रीवास्तव
डॉ. राजीव प्रकाश
श्री सुरेन्द्र पाल सिंह

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-84999-90-2

प्रकाशक :
संरचना प्रकाशक
30, थार्नहिल रोड
इलाहाबाद-299001

वितरक केन्द्र :
जगदीश सरन हिन्दू
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अमरोहा-244221 (उ.प्र.)

कम्प्यूटर ग्राफिक्स :
नईम अहमद सिद्दीकी
अमरोहा।

कापीराइट :
लेखक

संस्करण :
फरवरी, 2018

Scanned by CamScanner

विषय-सूची

क्रमांक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	श्रद्धेय साहू जगदीश सरन जी को शत्-शत् नमन्!	6
2.	डॉ. प्रीति गौतम, निदेशक, उच्च शिक्षा, इलाहाबाद	7
3.	प्रोफेसर अनिल शुक्ल, कुलपति, एम.जे.पी.रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली	8
4.	डॉ. राम प्रकाश यादव, क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, बरेली	9
5.	डॉ. राज नारायण शुक्ल, कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ	10
6.	इं. जय गोपाल माहेश्वरी, संरक्षक, प्रबन्ध समिति	11
7.	रमेश कुमार अग्रवाल, अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति	12
8.	गिरीश चन्द अग्रवाल, मंत्री, प्रबन्ध समिति	13
9.	डॉ. (श्रीमती) वन्दना रानी गुप्ता, प्राचार्या	14
10.	सम्पादक की क़लम से.....	15
11.	हिन्दी पत्रकारिता का सफर/डॉ. बबलू सिंह	17
12.	स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. (श्रीमती) वन्दना रानी गुप्ता, डॉ. संयुक्ता देवी	20
13.	स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता के सामाजिक सरोकार/डॉ. ममता खांडल	25
14.	हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ/डॉ. धर्मेन्द्र कुमार	31
15.	पत्रकारिता में महिलाओं का योगदान/डॉ. भावना गोयल	34
16.	पत्रकारिता शिक्षा महात्मा गाँधी के शब्दों में-बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट विकास हिन्दी पत्रकारिता हिन्दी की प्राथमिकता एवम् दृष्टिकोण/डॉ. कादम्बरी मिश्रा/अंजूलिका/श्रीमती पारूल तिवारी	37
17.	मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में प्रेस, दूरदर्शन और पठकथा/डॉ. मनुप्रताप, डॉ. गजरानी	41
19.	भारतीय समाज में हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियाँ/डॉ. मनुप्रताप, डॉ. गजेन्द्र पाल सिंह	48
20.	राष्ट्रीय आन्दोलन में भारतेन्दुयुगीन पत्रकारिता का योगदान/आशीष कुमार	52
21.	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. फ़ैज़ान अहमद	57
22.	हिन्दी पत्रकारिता : प्रगति और सोपान/शालिनी वर्मा, रेखा देवी	65
23.	वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी पत्रकारिता/डॉ. रीतू भटनागर	68
24.	आर्ट में दूरदर्शन, फिल्म पोस्टर की मुख्य भूमिका/डॉ. विनीता शर्मा	71
25.	पत्रकारिता का स्वरूप और चुनौतियाँ/डॉ. सुषमा गौडियाल	75
26.	पत्रकारिता में चुनौतियाँ/मोहिनी त्यागी, रेनू राजपूत	80
27.	नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता/डॉ. ज्ञान सिंह	87
28.	हिन्दी पत्रकारिता के आयाम और कवि लीलाधर जगूड़ी का योगदान/कीर्ति पटेल	98
29.	रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म एवं वीडियो पत्रकारिता की महत्ता/डॉ. अर्चना रानी	103

Scanned by CamScanner

30. पत्रकारिता में महिलाओं का योगदान/डॉ. आशा दूबे, डॉ. पूनम वर्मा 107
31. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. सीबा अनवर 111
32. हिन्दी पत्रकारिता का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोल में योगदान (काकोरी केस के सन्दर्भ में)/ वीरेन्द्र सिंह, डॉ.रश्मि गुप्ता 115
33. स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी दलित पत्रकारिता का योगदान/डॉ. अजय कुमार 120
34. हिन्दी पत्रकारिता एवं दलित चिंतन की स्थिति/रचना कुमारी, डॉ. वी.बी. बरतरिया 123
35. पत्रकारिता का महत्व/नईम अहमद सिद्दीकी 129
36. स्वाधीनता युगीन हिन्दी पत्रकारिता में चित्रित आर्थिक शोषण/ममता देवी 134
37. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. विधि भूषण मौर्य 137
38. पत्रकारिता शिक्षा महात्मा गाँधी के शब्दों में-जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त कर सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्वक प्रकट करना वांछनीय भावनाओं को जागृत कर मानवीय गुणों के विकास करना/ डॉ. रूपेश कुमार मिश्रा/श्रीमती पारूल तिवारी/ डॉ. कादम्बरी मिश्रा 143
39. जनमानस तक पहुँचती पत्रकारिता की आवाज़ : रेडियो के सन्दर्भ में/किरनदीप सिंह 149
40. पीत-पत्रकारिता/डॉ. विजेन्द्र सिंह 151
41. हिन्दी पत्रकारिता एवं उत्तर आधुनिकतावाद/डॉ. रामानन्द वैद्य, डॉ. पंकज चतुर्वेदी 154
42. हिन्दी पत्रकारिता में महिलाओं का योगदान/डॉ. राजबाला 157
43. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में, हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. संगीता पाण्डेय 160
44. पत्रकारिता चुनौतियाँ और भारतीय सुरक्षा/डॉ रूबी सिद्दीकी 164
45. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डा. हेमेन्द्र सिंह, संगीता 167
46. रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म एवं वीडियो पत्रकारिता की महत्ता/डॉ. बालेश्वर प्रसाद 170
47. हिन्दी पत्रकारिता एवं लोकतंत्र/संजय कुमार यादव 173
48. हिंदी पत्रकारिता: कल आज और कल/डॉ. शशि प्रभा 175
49. महिलाओं के संदर्भ में नई मीड़िया तथा सामाजिक परिवर्तन/रूबि वर्मा, रूपेश कुमार सिंह 180
50. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. नीतू गोस्वामी 185
51. वर्तमान पत्रकारिता : सवालों के घेरे में/डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे 189
52. हिन्दी की नवीन गद्य-विधा 'लम्बी कहानी' के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/ प्रीति चौहान 195
53. स्वाधीनता युगीन हिन्दी पत्रिकाओं में स्त्री चिन्तन/राम बिलास यादव 206
54. भारतीय लोकतंत्र के विकास में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका/सुनील कुमार 209
55. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता और मुंशी प्रेमचन्द/डॉ. मोनू सिंह 215
56. रेडियो दूरदर्शन, फिल्म एवं विडियो पत्रकारिता की महत्ता/डॉ. अनिल रायपुरिया 221
57. हिन्दी की साहित्यिक लघु पत्रकारिता/डॉ. ए.के. रूस्तगी, डॉ. बीना रूस्तगी 223
58. पीत पत्रकारिता/डॉ0 राखी चौहान, श्रीमती चित्रा रानी 234
59. हिन्दी साहित्य में पत्रकारिता का स्वरूप/डॉ. अंजू बंसल 238
60. पीत पत्रकारिता/डॉ. प्रवीन कटारिया 243

Scanned by CamScanner

61. लघु पत्रिका एवं साहित्यिक पत्रकारिता/डॉ. यज्ञेश कुमार 247
62. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. शिवानी गोयल/डॉ.नवनीत विश्नोई 252
63. भूमंडलीकरण और हिन्दी पत्रकारिता : चुनौतियाँ एवं समाधान/डॉ. मन मोहन सिंह 257
64. स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. नितिन त्यागी, डॉ. बबीता त्यागी 260
65. हिन्दी पत्रकारिता में प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल का योगदान/नीता अग्रवाल, डॉ. वन्दना रानी गुप्ता 264
66. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ. दीपक कुमार अग्रवाल 269
67. राष्ट्रीय मुक्ति का संदर्भ और हिन्दी पत्र कारिता (भारतेन्दु के विशेष संदर्भ में)/डॉ. रामचन्द्र रजक 272
68. हिन्दी पत्रकारिता एवं लोकतंत्र/डॉ. मनन कौशल, संकेत कुमार गौढ़ 276
69. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ0 रीता 278
70. हिन्दी पत्रकारिता एवं लोकतंत्र/संजय कुमार यादव 283
71. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान/डॉ0 मनमीत कौर, डॉ0 मिन्नी 285

❖❖❖

Scanned by CamScanner

वर्तमान पत्रकारिता : सवालों के घेरे में

पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के "जर्नलिज्म" शब्द का पर्याय है। 'जर्नल' शब्द का अर्थ है 'दैनिक विवरण'। जर्नल शब्द फ्रैंच भाषा के 'जर्नी' शब्द से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक कार्यो का विवरण देना है। इसी परिप्रेक्ष्य में जर्नलिज्म का अर्थ हिन्दी में पत्रकारिता हो गया है। हिन्दी में पत्रकारिता शब्द 'पत्र' से निकला है जिसका अर्थ 'सूचना या सन्देश वहन करने वाला उपकरण' है। लेखन कला के आरंभ होने के बाद पत्र लिखकर ही संवादो का आदान–प्रदान किया जाने लगा था। पत्रकारिता भी ऐसा ही एक जन–संवाद है। समाचार से युक्त पत्र अंग्रेजी में न्यूज पेपर और हिन्दी में समाचार पत्र कहे जाते हैं। समाचार एकत्र करने वाले पत्रकार संवाददाता कहे जाते हैं। अंग्रेजी के साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक जर्नल्स की तर्ज पर हिन्दी में पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से सम्बद्ध लेखन कार्य को 'पत्रकारिता' कहा जाता है।

पत्रकारिता का क्षेत्र आज व्यापक हो गया है। संचार साधनों और तकनीकी जानकारियों ने समाचार पत्र पत्रिकाओं से लेकर आकाशवाणी, दूरदर्शन, मोबाइल, इन्टरनेट तक पत्रकारिता को विस्तृत आयाम प्रदान किया है। इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रिन्ट मीडिया, सोशल मीडिया और मीडियाकर्मी जैसे नये शब्द प्रचलन में हैं।

पत्रकारिता का क्षेत्र चुनौती भरा है। किसी शायर का यह कथन पत्रकारिता के लिये भी उतना ही सही है जितना इश्क के लिये –

"यह इश्क नहीं आसाँ बस इतना समझ लीजै
इक आग का दरिया है और डूब के जाना है"

पत्रकारिता के लिये भी साफ दिल जोश–जुनून और दीवानगी चाहिये।

पत्रकारिता जिम्मेदारी भरा काम है जो तटस्थता और निष्पक्षता की मॉग करता है पर विगत कुछ वर्षो से पत्रकारिता पर अनेक सवाल उठने लगे हैं विशेषकर इसकी विश्वसनीयता और कार्यशैली पर। ये बेहद असम्मानजनक व दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है।

पत्रकारिता हमारे देश में लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। इसे जनता की आवाज होना चाहिये। बंगाल गजट, उदंत मार्तण्ड से लेकर सरस्वती, बहिष्कृत भारत, मूकनायक तक सभी पत्र–पत्रिकायें जनता की आवाज थी। इनमें जनता की पीड़ा, वेदना, सुख–दुःख और समस्याये थी। जनता के पास यथार्थ तो था पर उसके पास अपना दर्द बयाँ करने की अभिव्यक्ति क्षमता नहीं थी, वाणी नहीं थी। पत्रकारिता उनकी वाणी शक्ति बनकर सामने आयी और जन अपेक्षाओं पर खरी उतरी। पत्रकारिता सत्ता और व्यवस्था के विरूद्ध एक जन आन्दोलन खड़ा करने में सफल रही तभी तो पूरी दुनिया में क्रांति की वाहिका बन सकी।

देश की आजादी के पहले अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध लड़ाई लड़ने में पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के दीवाने भगत सिंह से लेकर सुभाष चन्द्र बोस तक भारतेन्दु से लेकर प्रगतिवादी काव्य तक लगभग सभी साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़े रहे तब राष्ट्रीय एकता का मुख्य स्वर था जिसमें जनता केन्द्र में थी। पत्रकारिता क्रांति की मशाल थी, तोप तलवार से भी ज्यादा खतरनाक थी। तभी तो अकबर इलाहाबादी ने कहा– "जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार

Scanned by CamScanner

निकालो"। तोप तलवार तो सामने खड़े चंद लोगों को ही गिरा सकते हैं, पर अखबार पूरे साम्राज्य को ध्वस्त करने की क्षमता रखते हैं। आजादी के कुछ दशकों बाद तक अखबार की धार पैनी थी और सरकारें भी पत्रकारिता की स्वतंत्रता की पोषक थी। पर धीरे–धीरे परिस्थितियाँ बदलती गई और आज का दिन है जब लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के केन्द्र से 'लोक' ही गायब है।

आज भूख से मरता गरीब, बीमारी से लड़ता मरीज, अभावों से जूझता निम्न वर्ग, पिसता मध्यवर्ग, बंजर होती जमीनें उद्योगपतियों द्वारा छीनी जा रही कृषिभूमि, कर्ज से आत्महत्या करते किसान, शर्मसार होती इज्जत, धार्मिक कट्रता की भेंट चढ़ते श्रद्धालु, दलितों के जलते हुए घर, बिजली बिल, राशन दुकान और एटीएम में लगी लाईनें, दहेज, तलाक, बेरोजगारी के दृश्य पत्रकारिता के चमचमाते मखमली स्क्रीन (पन्नों) से नदारद हैं। शायद इसलिये कि आज पत्रकारिता धूल मिट्टी, कीचड़ की गलियों से निकलकर विक्ट्रीफाइड टाइल्स और मार्बल्स ही चमचमाती फर्श पर आ खड़ी है। उसके हाथ में जनता का दोना पत्तल नहीं बल्कि सत्ता और कार्पोरेट घराने से मिला सोने की थाली और सोने का चम्मच है जिसकी चमक में पत्रकारिता की ऑखे चुँधिया गई है और गाँव गरीब का सच दिखाई नहीं पड़ रहा।

सड़कों के गड्ढे मीडिया के लच्छेदार शब्दों से भर दिये गये हैं। सरकारों ने मृदंगम मुख लेपे करोति मधुरम् ध्वनि' की सूक्ति का सहारा लेकर मीडिया से मीठा बोलवा लिया है। ऐसे में छली जा रही है – भोली भाली जनता। भारतीय जनता तो 'गऊ' है उसे मीडिया पर पूरा भरोसा है पर उसके पैरों तले जमीन खिसक जायेगी जब उसे पता चलेगा कि मीडिया बेवफा है, वह उसका नहीं बल्कि किसी और का है। पत्रकारिता की स्थिति आज लगभग कुछ इस तरह ही हो गई है जो जनता का हमसफर होने की बात करके उसके अर्धांगिनी होने का दावा तो करती है लेकिन उसका ब्रेकफास्ट धर्म की एकांत गुफा में लंच सत्ता की सेज पर और डिनर कार्पोरेट घरानों के रेड कारपेट पर होता है। दिनभर हाड़ तोड मेहनत कर थकी भूखी जनता को वह शासन, भाषण, ज्ञापन, विज्ञापन और आश्वासन की लोरियाँ सुनाकर सुला देती हैं।

पत्रकारिता सत्ता की गलत नीतियों का विरोध करने का दायित्व नहीं निभा पा रही हैं। इसके उल्टे वह सत्ता का 'चारण' बन बैठी है। सत्ता के एजेन्ट के रूप में सरकार की नीतियो को जनता तक पहुचांने का माध्यम बन गई है। जनता क्या चाहती है यह नहीं बल्कि सत्ता क्या चाहती है यह 'वन–वे' कन्वर्सेशन चल रहा है। संपादकीय और विशेषज्ञों के लेख भी चाटुकारिता की चाशनी में डूबे हुए हैं। भारतीय जनता के 'शुगर' का एक बड़ा कारण यथार्थ की कड़वाहट से ज्यादा मिथको की झूठ का मिठास है। अखबार के पन्ने आकाशवाणी के संदेश और टी.वी. चैनलों की सुर्खियों में सरकार की प्रशंसा के हवा–हवाई पुल बांधे जा रहे हैं, जो लोकतंत्र की एक फूंक से नेस्तनाबूद हो सकते हैं। इस लोकतंत्र को कमजोर करने में भी बड़ी भूमिका पत्रकारिता की ही है क्योंकि इसके पॉव यथार्थ की मजबूत जमी पर नहीं है।

आज जब पत्रकारिता वास्तविक मुद्दों से भटककर दायित्व बोध से छिटककर, महंगी गलियारों में मटककर चल रही है तब स्वाभाविक है कि भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखन लाल चतुर्वेदी, गॉधी, अम्बेड़कर जैसी शख्यियत हमें याद आयेंगी ही। उनका विचार, दर्शन, समर्पण और त्याग हमें स्मरण हो आयेगा। लेकिन उनकी विरासत को आगे बढ़ाने वे खुद नहीं आयेंगे, वर्तमान पीढ़ी को ही यह जिम्मेदारी लेनी होगी। कबीर ने कहा है –

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई शूरमा, जाति, बरन, कुल खोय।।

Scanned by CamScanner

पत्रकारिता भी इसी भक्ति के ऊंचे शिखर तक पहुंच सकती है। यदि कर्म ही पूजा बन सके तो पत्रकारिता भी लोकतंत्र के मंदिर की भक्ति बन सकती है। इसके लिए त्याग चाहिये लोभ नहीं। यह लालच बुरी चीज है –

माखी गुड़ में गड़ी रहे, पंख रहे लपटाय।
हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय।।

पत्रकारिता विज्ञापन के लोभ और सत्ता के मोह में इस कदर दलदल में फँस गई है कि सारा 'सूरमापन' चुसे हुए गन्ने की तरह निकल गया है। रवीश कुमार जैसे कुछ पत्रकारों ने अपना 'पानी' सहेज कर रखा है अन्यथा अधिकांश के आंखों में तो पानी बचा भी नहीं।

पत्र–पत्रिकाओं में विज्ञापन एक अनिवार्य हिस्सा है, होना चाहिये। पहले खबरों के बीच कोई छोटा स्पेस विज्ञापन को मिल पाता था। आज तो प्रथम पृष्ठ से अंतिम तक केवल विज्ञापन का राज है– विज्ञापन का बाजार और बाजार का विज्ञापन, विज्ञापन की सत्ता और सत्ता का विज्ञापन, विज्ञापन का धर्म और धर्म का विज्ञापन, विज्ञापन का पाखंड और पाखंड का विज्ञापन, विज्ञापन की संवेदना और संवेदनाओं का विज्ञापन, विज्ञापन का भाव और भावनाओं का विज्ञापन, विज्ञापन की अश्लीलता और अश्लीलता का विज्ञापन, विज्ञापन का झूठ और झूठ का विज्ञापन, विज्ञापन की होड़ और होड़ का विज्ञापन चल रहा है, इसमें विज्ञापन की जरूरत और जरूरत का विज्ञापन कही खो गया है। इन विज्ञापनों का मूल्य तो है पर इनमें जीवन मूल्य नहीं है।

घर, कार, बाइक, कम्प्यूटर, टी.वी., मोबाइल इलेक्ट्रानिक उपकरणों से लेकर, स्कूल, कालेज, दवाई, कपड़े चड्डी, बनियान, टूथपेस्ट, ब्रश तक जरूरत की सारी वस्तुओं का विज्ञापन है लेकिन इसी में भूत–प्रेत, जादू–टोना, वशीकरण, फर्जी कंपनियों के कारोबार का भी विज्ञापन है जो समाज के लिये घातक है। ऐसे विज्ञापन लोभ नहीं तो क्या है? और यदि कही सत्ता और बड़ो का डर है वहॉ पत्रकारिता को खुद से यह सवाल पूछना चाहिये कि क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे? विज्ञापन के बाजार में पत्रकार और समाचार कहीं खो गये हैं इन्हें ढूंढने की जरूरत है।

ऐसे में स्वतः याद आते हैं माखनलाल चतुर्वेदी जी जिन्होंने बिलासपुर केन्द्रीय जेल में बैठकर यह कविता कही जो आज पत्रकारिता के लिये आदर्श वाक्य हो सकती है –

चाह नहीं मै सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर चढूं भाग्य पर इठलाऊँ
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

इस पुष्प की अभिलाषा को पत्रकारिता की अभिलाषा बनाना होगा और भारत तथा भारतीयता के विकास में अपना योगदान देना होगा। इसके लिये जरूरी है कि पत्रकारिता को अपने दायित्व का बोध हो, वह असली मुद्दों से जुड़े और आत्मसम्मान के साथ खड़ा हो। पत्रकारिता को राष्ट्रीयकरण करने की जरूरत नहीं है आज इसे वैश्विक होना होगा, प्रोफेशनल होना होगा, नये तकनीकों का उपयोग करके 'माडर्न' बनना होगा, भाषा के ठेकेदारों और साहित्य के मठाधीशों से मुक्त होना होगा। पत्रकारिता साहित्य से गहरे में संबंधित है पर साहित्य नहीं है उसे साहित्य के सॉचे में ढालना उसके साथ अन्याय है अतः अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा भी उसे करनी

Scanned by CamScanner

होगी और साहित्यिक भाषा शिल्प के आग्रहों से उसे मुक्त होना होगा। बिना अंग्रेजी पर आश्रित हुए वैश्विक मीडिया भाषा परिवार में शामिल होना होगा। तब हिन्दी पत्रकारिता स्वतंत्र कार्य कर सकेगी।

अतीत में भारत ही नहीं पूरे विश्व में समय–समय पर जो बड़ी क्रांतियाँ हुई है उनके पीछे पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है जो नये–नये विमर्श खड़े करके आन्दोलन को जन्म देती रही है। पर विगत कुछ दशकों से भारतीय पत्रकारिता के पर कतर दिये गये हैं सत्ता, बाजार और धर्म के सिंहासन पर बैठे तथाकथित शक्तिशाली लोगों ने कार्यपालिका, व्यवस्थापिका में मनमानी करने के बाद न्यायपालिका में ताक–झॉक शुरू किया है और पत्रकारिता की कमजोर नब्ज को टटोलकर 'गर्म तवे पर रोटी सेंकते हुए' 'गर्म लोहे पर हथौड़ा मारना' सीख लिया है। सत्ता बाजार और ध र्म के ठेकेदारों ने पत्रकारिता की ऐसी दुर्गति कर दी है कि देश के तथाकथित बड़े पत्रकार भी इनके 'एडिक्ट' हो गये है।

'भूख से पॉच लोगों की मौत' को खबरों में स्पेस नहीं मिल पाता 'धर्म को बचाने चार लोग धरने पर' यह देश की बड़ी खबर बन जाती है। गॉव के दो सौ दलित परिवार को सार्वजनिक कुऍं और तालाब से पानी नहीं मिल रहा' इस पर कोई चर्चा नहीं, गाय, गोबर और गौमूत्र' पर व्याख्यान चल रहे हैं। जातिवाद से सारा देश जल रहा है इसका समाधन खोजने का कोई प्रयास नहीं बल्कि मंदिरों में दलितो का प्रवेश क्यों वर्जित है इसके पक्ष में तर्क दिये जा रहे हैं। संविधान और आरक्षण बचाने के समर्थन में सड़क पर उतरे लाखों लोगों की भीड़ किसी पत्रकार और अखबार को दिखाई नहीं पड़ती लेकिन चार चौधरी जब संविधान संशोधन और आरक्षण समाप्त करने ज्ञापन सौंपते है तो कवरेज के साथ–साथ परिचर्चा भी होती है। दिल्ली की निर्भया के लिये मीडिया पूरे देश को खड़ा कर लेता है परन्तु बस्तर और सरगुजा की आदिवासी बालाओं और सहारनपुर व विभिन्न हिस्सों की दलित महिलाओं की अस्मिता और सम्मान के लिये उसके कलम की एक बूंद नहीं गिरती। मीडिया को भी मुसलमान आतंकवादी, दलित देशद्रोही, आदिवासी नक्सली के रूप में दिखाई देता है क्यो?

वह किसके चश्में से देश और देशवासियों को देख रहा है? देश के सीमा पर शहीद जवान के शव को दफनाने के लिये आज भी उसके गॉव का वह कब्रिस्तान राजी नहीं जहॉ पर तथाकथित बड़े लोग दफन किये जाते है। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज सीमा पर तैनात जवान जो आतंकवाद और नक्सलवाद से लड़ रहे है उनकी शहादत को कवरेज तभी मिलता है यदि वे तथाकथित ऊँचे वर्ग से हैं। किसी नेता की सभा में 10 लाख लोगों की भीड़ है उसका कोई समाचार नहीं और 10 हजार लोगों की भीड़ का लाइव टेलीकास्ट पूरा भाषण चल रहा है। पूरी दुनिया अपनी समस्याओं के निदान के लिये वैज्ञानिक और वैधानिक तरीके ढूंढ रही है और हमारी मीडिया आज भी पाखण्ड और आडम्बर का मार्ग दिखा रही है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाये धर्म और उसकी मान्यताओं का तो खुलकर प्रचार कर रहे पर देश के सर्वोच्च कानून संविधान की जानकारी न तो खुद रखना चाहते न ही देश के नागरिकों को देना चाहते, आखिर क्यो?

लोकतंत्र का यह स्तंभ संविधान के प्रावधानों से स्थापित है फिर भी संविधान को समर्थन करता दिखाई नहीं देता क्यों? इससे लोकतंत्र मजबूत होगा? आखिर पत्रकारिता संविधान पर आस्था क्यों नहीं रखती? उसका प्रचार–प्रसार क्यों नहीं करती? नये विमर्शो को जन्म क्यों नहीं देती? हाशिए के समाज के विमर्श एवं उनके प्रतिनिधित्व को समर्थन क्यों नहीं देती? नये वैचारिक आन्दोलन क्यों खड़ा नहीं करती? वैज्ञानिक और तार्किक मूल्यों को बढ़ावा क्यों नहीं देती? हाशिए

Scanned by CamScanner

के समाज को प्रतिनिधित्व व उनकी बात कहने का अवसर अपने मंच से क्यो नहीं देती? जातिगत भेदभाव की सच्चाई क्यों नहीं दिखाती? धार्मिक कट्टरता फैलाने वालों पर कुछ क्यों नहीं लिखती? भारतीय वर्ण व्यवस्था की तरह क्या मीडिया भी जातिवादी हो गया है?

पत्रकारिता को तो निष्पक्ष होना चाहिये। समाज जैसा है वैसा लिखिए समस्या का वास्तविक कारण और समाधान ढूँढिए। जब तक शूद्र की तपस्या के कारण किसी ब्राहमण का बेटा मरता रहेगा तब तक बेगुनाह शम्बुक मारे जाते रहेंगे और अर्जुन के लिए शिष्यत्व की आड़ में एकलव्य के अंगूठों की बलि ली जाती रहेगी। तब पत्रकारिता नहीं थी, लेकिन आज है और इन सब में पत्रकारिता का सकारात्मक हस्तक्षेप होना चाहिए। मीडिया को यदि अपनी विश्वसनीयता स्थापित करनी है तो उसे भारत के लोकतंत्र, संविधान और संवैधानिक मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता स्पष्ट करनी होगी समता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व पर निष्ठा रखनी होगी, गॉधी और अम्बेडकर के व्यक्तित्व का आकलन उनके जन्म के बदले कर्म से जोड़कर करना होग, मंगल पाण्डे के साथ मातादीन भंगी की भी जय–जयकार करनी होगी, रानी लक्ष्मीबाई के साथ झलकारी बाई का नाम भी लेना होगा, बैंडिट क्वीन में फूलनदेवी के नग्न दृश्यों पर तालियॉ बजाने वालों को पद्मावत के विरोध पर झकझोरना होगा। नहीं तो पक्षपाती होने का कलंक पत्रकारिता पर लगा ही समझो।

पत्रकारिता को कबीर की तरह खरी–खरी कहने की आदत होनी चाहिये। कबीर कहते हैं –

कबिरा खड़ा बजार में, मॉगे सबकी खैर।
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।।

कबीर निष्पक्ष खड़े थे क्योंकि किसी से न दोस्ती थी न दुश्मनी लेकिन मीडिया की दोस्ती 'कुछ' से ज्यादा हो गई है जिसके कारण ये निष्पक्ष नहीं रह पा रही हैं। पत्रकारिता एक पेशा नहीं तपस्या है। यह तपस्या सबके बस की बात नहीं। इस मार्ग पर वही आयें जो तप सकने के लिये राजी हो। कबीर के निम्न कथन को आत्मसात करना जरूरी है –

कबिरा खडा बजार में लिया लुकाठी हाथ।
जो घर बारै आपना वो चलै हमारे साथ।।

पत्रकार वह अच्छा है जो अपने लोभ लालच (कामनाओ के घर) को जला सके और तटस्थ रहकर नीर–क्षीर विवेक से लिख सके। निश्चित ही पत्रकारिता के मार्ग पर अनेक चुनौतियाँ है पर इससे लोक का भरोसा अभी टूटा नहीं है, पाठक करोड़ों की संख्या में बढ़ रहे हैं, तकनीके सहयोग कर रही हैं, वैज्ञानिक उपकरणों ने गति कई गुना बढ़ा दी है, नवीन शब्द गढ़े जा रहें हैं, प्रचार–प्रसार के नित नये साधन उपलब्ध हो रहे हैं। प्रतीक्षा है तो बस उस पल की जब लोकतंत्र का यह चौथा स्तंभ सारी बेड़ियों जंजीरों को तोड़कर संवैधानिक रूप से स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में पुनः खड़ा हो सके, और इसी की जरूरत भी है। दुष्यंत कुमार के शब्दों में –

हो गयी है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिये

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये

जो मेरे दिल में नही तो तेरे दिल में सही
जल उठी है आग तो ये आग जलनी चाहिये।
अब हिमालय से नयी गंगा निकलनी चाहिये

Scanned by CamScanner

उम्मीद की जानी चाहिये कि पत्रकारिता अपने पूर्ण दायित्व बोध के साथ आत्मसम्मान सहित 'लोक' के साथ खड़ी होगी और उपभोक्तावाद से उपयोगितावाद की ओर चलकर भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1 मीडिया बाजार और लोकतंत्र – संपा. पंकज बिष्ट, भूपेन सिंह शिल्पायान, दिल्ली 2012
2 हिंदी नई चाल में ढली (एक पुनर्विचार)–संपा. पुरूषोत्तम अग्रवाल, संजय कुमार, देशकाल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
3 मीडिया मिथ और समाज – रामशरण जोशी, शिल्पायन, दिल्ली, 2012
4 पत्रकारिता प्रशिक्षण – प्रो. जे.पी. शर्मा, अभय प्रकाशन मंदिर आगरा,
5 टी.वी. चैनल – आज तक, ई.टी.वी. म.प्र. छत्तीसगढ़, जी न्यूज, आई.बी.सी. 24, जी छत्तीसगढ़, एन.डी. टी.वी.
6 दैनिक समाचार पत्र – नई दुनिया, नवभारत, दैनिक भास्कर, हरिभूमि (बिलासपुर संस्करण)
7 कबीर – संपा. हजारी प्रसाद द्विवेदी
8 भारत का संविधान
9 रामचरित मानस
10 मनुस्मृति

❖❖❖

❑डॉ. हेमन्त पाल घृतलहरे
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी
भास. महाविद्यालय सनावल
(बलरामपुर) छ.ग.

Scanned by CamScanner